सारथी – जरूरतमंद कलाकारों के मददगार

दोस्तो,

14 अगस्त 1988 को स्व॰ कमला देवी चटोपध्याय जी ने हमारे बुनकरों द्वारा बनाया गया तिरंगा हुनरमंद कलाकारों की नई पीढ़ी को सौंपा था। उस दिन से आज तक हम सब बुनकर, दस्तकार, संगीतकार और लोक कलाकारों की सहकारी समितियाँ हर वर्ष एक खास विषय लेकर स्वतंत्रता दिवस मनाते आये हैं।

इस वर्ष का विषय है.....

एकता में अनेकता : आज़ादी का आलोक

बात 70 के दशक की है शादीपुर डिपो के सामने कुछ भाट परिवार पन्द्रह साल पहले राजस्थान से आये और दिल्ली की एक गुमनाम कच्ची बस्ती में बस गये। इसी तरह दूसरे घुमन्तू नट, बाजीगर, मसेत, कलन्दर इत्यादि उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र से आते रहे और दिल्ली के किसी कोने–किनारे में झुग्गी–झोंपडी और टेंट लगा कर रहने लगे। काम की खोज में गाँव को छोड़ा तो शहर की सडकों पर कोई न कोई काम मिल ही जाता है।

मैं जब भी इन सब से मिलता तो इन्हें एक साथ होने की या एक जगह इकट्ठा होने की सलाह देता। आपातकाल के दौरान सरकार की 'नई पुनर्वास योजना' के तहत इन सब को शादीपुर डिपो से हटा दिया गया। कठिनाई आने पर सब सीखते हैं, गिरते हैं तभी सम्भलते हैं। गुमनाम स्लम में बिखर जाने पर इन्हें अपनी सही शक्ति का अहसास हुआ।

इन सब की एक ठोस पहचान बनाने के लिए हम भजन, सत्संग और नौटंकी करते थे। 1976 में 'भूले बिसरे कलाकार कोऑपरेटिव सोसायटी' बनवाने का काम उन हुनरमन्द कलाकारों के लिए शुरू हुआ जिन्हें मंगतवरण का दर्जा देकर नीची नज़र से देखा जाता था। इस सिलसिले में बुनियादी कोशिश यह रही कि एक संस्था बन जाने से इनमें न केवल परस्पर एकता आएगी बल्कि इनकी अलग पहचान बनेगी और इन्हें कलाकार का दर्जा हासिल हो सकेगा। यह उल्लेखनीय है कि यह सोसायटी दुनिया के पारम्परिक कलाकारों की पहली संस्था थी जिसका मैनेजमेंट अब भी कलाकार खुद करते हैं।

कहना न होगा कि 'भूले बिसरे कलाकार कोऑपरेटिव' की स्थापना के कारण ही लोक कलाकार इस के झण्डे तले इकट्ठा हो सके और अन्ततः शादीपुर में बस गये। आज यह बस्ती 'कठपुतली कॉलोनी' के नाम से जानी जाती है। इससे पहले, बातों में तो बारह पाल (बारह जातियों का एक पौराणिक समूह) की चर्चा होती थी लेकिन असल में इनका आपस में एक साथ उठना–बैठना, खाना–पीना नहीं होता था। आज कुछ हद तक संस्था के कारण स्थिति में बदलाव आया है और ये सभी साथ–साथ रहने लगे हैं, लड़ते भी हैं लेकिन एक दूसरे के सुख–दुःख में साथ देते हैं।

अपने ही देश में भिखारी समझे जाने वाले इन कलाकारों ने जब 1982 में इंग्लैंड और 1985 में अमेरिका में अपनी कला का प्रदर्शन किया तो टी॰ वी॰, अखबार, पत्रिका, फोटोग्राफर आदि सभी इस 'कठपुतली कॉलोनी' की तरफ दौड़ पड़े। यहाँ तक कि विदेशी कलाकार, स्कॉलर, लेखक आदि इन घुमन्तू कलाकारों के मेहमान बने। हवाई यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर ली सीगल ने अपनी किताब 'नेट ऑफ़ मैजिक' में लिखा है कि "जब मैंने टैक्सी वाले को 'कठपुतली कॉलोनी' जाने को कहा तो वो समझ नहीं पाया कि मैं वहाँ क्यों जाना चाहता हूँ?" अगर यह घुमन्तू कलाकार एकजुट न होते और अपने कलाकार होने कि पहचान का प्रदर्शन नहीं करते तो क्या इतने मशहूर हो पाते ?

आजादी से पहले सत्ता की बागडोर अंग्रेज़ों के हाथों में थी। देश में क्या होना है, कैसे होना है, कौन करेगा, इसका फैसला वे लोग ही करते थे। अंग्रेजों की जगह अब गैर सरकारी संस्थाएँ, ट्रस्ट व अस्थिर सरकार की बदलती योजनाओं और अफसरशिरी ने ले ली है। आज भी हुनरमन्दों को जो अधिकार व मान्यता मिलनी चाहिए थी वह नहीं मिली। कलाकारों की आय के अवसर उम्मीद जितने नहीं बढ़े और उनकी निजी दयनीय हालत भी पहले से बेहतर नही हो सकी। न जाने कला और कलाकार अपनी आजादी का उत्सव कब मना पाएंगे!

जब कलाकार किसी जजमान के सामने या बाजार में पहुँचते हैं तो एक दूसरे की होड़ में अपनी कला को सस्ते दामों में इसलिए भी बेच देते हैं क्योंकि वे 'बाँट कर राज' करने की नीति समझ नहीं पाते। जबकि यह जानना दिलचस्प है कि इन्हीं कलाकारों को जब आपस में मिलकर काम करने का अनुकूल माहौल व सुविधा मिलती है तो इन्हें अपने काम की अच्छी कीमत के साथ–साथ वह गरिमामय पहचान व सम्मान भी मिलता है जिससे समाज व जीवन में इनकी आस्था गहराती है। इस सन्दर्भ में गुजरात की 'सेवा' और राजस्थान की 'उरमूल' आदि संस्थाओं को बतौर उदाहरण रखा जा सकता है।

क्या यह रेखांकित करने लायक बिन्दु नही है कि कृषि के बाद सबसे ज्यादा रोजगार सांस्कृतिक उद्योग से जुड़े हुनरमन्दों को मिलता है ?बहुत बड़ी संख्या कारीगरी से जुड़ी है लेकिन दुर्भाग्य से बँटी हुई है। कुछ को तो समाज आज भी नीची श्रेणी में देखता है। सरकार की नजर में भी कलाकारों की पहचान कोई अहमियत नहीं रखती। ज्यादातर पिछड़ी, अनुसूचित जाति / जनजाति में गिने जाते हैं और कुछ अपराधशील में। सरकार के अपने आँकड़ों का कोई हिसाब नहीं है.....अलग अलग मन्त्रालयो के मुताबिक देश में 60 लाख से 20 करोड़ की आबादी हुनरमन्दों की हो सकती है। आज सरकार की कोई ख़ास नीति न होने के कारण कारीगरों और कलाकारों को अलग–अलग समझ कर विभिन्न मन्त्रालयों में कुछ इस तरह से बाँट दिया गया है कि उन सब का जो अपना अलग एक विधागत वैशिष्ट्य है वह गड्डमड्ड हो गया है और इसकी वजह से असमंजस गहराता है। इसे शायद डुप्लीकेशन की संज्ञा दी जानी चाहिए।

कला जगत के स्तम्भ –दस्तकार, बुनकर, लोक कलाकार व शास्त्रीय संगीतकारों– को इकट्ठा कर इनकी 1986 में 'नेहरू कला–कुंज कोऑपरेटिव सोसायटी' बनवाई क्योंकि इनकी समस्याएँ भूले बिसरे कलाकारों से अलग नहीं थी। मैंने सोचा था कि इन चारों कला–वर्गों की एकता का एक चौराहा बना कर बतौर उदाहरण सरकार के सामने रखूँगा जिससे सभी इस पहल के पीछे की सार्थकता दृष्टि को समझ सके। अगर कला क्षेत्र से जुड़े व्यवसाय इकट्ठे हो जायें तो इससे देश के नेताओं और नीति निर्माताओं का ध्यान इनकी ओर जरूर जायेगा क्योंकि वे एक बड़े वोट बैंक का रूप धारण कर लेंगे। इससे सरकारी नीति भी बदल सकती है। अजीब विडम्बना है कि नेताओं को सिर्फ वोट बैंक ही दिखता है और योजनाकारों को संख्या।

हालांकि नीति निर्माताओं के लिए यह जानना जरूरी है कि कौन से लोग किन कलाओं से जुड़े हैं, पारम्परिक कलाएँ कितनी हैं, कितने हुनरमन्द अपनी कला को छोड़ मजदूरी कर अपना गुजर बसर कर रहे हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी चल रही कलाओं को क्या यह कलाकार अपने बच्चों को सिखा सकेंगे? क्या यह गहरी चिन्ता का विषय नही है कि कौन सी कलाएँ इतिहास का एक भूला–बिसरा हिस्सा बनने जा रही है? कभी–कभी लगता है जैसे हमारे मानवीय सरोकारों व जीवन–मूल्यों का पानी मर गया हो।

मेरे लगातार आग्रह से योजना–आयोग ने इस बात को स्वीकार किया कि कलाओं को एक साथ रखने से कला, कलाकार, संस्कृति, पर्यटन और इससे बनने वाली पहचान को एकदृष्टि मिल सकेगी और इसके महत्त्व को समझकर हाल ही में एक टास्क फोर्स का गठन किया। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे इसका उपाध्यक्ष बनाया गया है। मैं इस कमेटी की एक रूपरेखा बना कर कला क्षेत्र से जुड़े लोगों को आगे बढ़ाने का प्रयास करूँगा। इस काम को करने के लिए मुझे आप लोगों की सलाह की ज़रूरत पड़ेगी। यह शुरुआत हुनरमन्दों के सपनों को साकार करने की तरफ एक ठोस कदम है।

चलो, देर आये दुरुस्त आये। सरकार के इस बदलाव ने मेरे और देश के कलाकारों के मन में एक आस जगा दी है कि शायद जल्दी ही कलाकारों के दिन बदल जायेंगे। तब तक आईये, हम फिर से अपना गीत गुनगुनायें.....

बन्धन से मुक्त है दिशाएँ
जो चाहे रचे, बुने, गाये,
धरती पर स्वर्ग को बसाने
एक हुए कला के घराने।

आईये, आज फिर हम अपने मनमुटावों को भूल कर एक होने की कोशिश करें।

जय हिन्द

राजीव सेठी

आप की जानकारी के लिए मैं यह बताना चाहता हूँ कि शायद बीस साल के बाद मेरी इस अवसर की यह आखिरी चिटठी होगी क्योंकि अब वक्त आ गया है कि यह चिट्ठी आप के चुने नुमाईन्दे खुद अपने आप लिखें या इण्डियन कलाकार (समाचार पत्रिका) के जरिये। इस संवाद को सिर्फ सालाना न बनायें बल्कि एक नियमित आदत बनायें। यह कलाकारों की अपनी पत्रिका होगी और उम्मीद करता हूँ कि जल्दी ही बाजार में आ जायेगी।

सहकारी समितियों को ज़मीन दिलाने के उद्देश्य से रजिस्ट्रार कोऑपरेटिव व दिल्ली सरकार से बातचीत का सिलसिला बना हुआ है।

कला व संचार–माध्यम में तालमेल –: इलैक्ट्रोनिक युग में संचार माध्यम और अन्य क्षेत्रों से जुड़े लोगों व संस्थाओं से सम्पर्क कर उन्हें कलाकारों तक पहुँचाने में एक सम्पर्क–सूत्र का काम करते हैं। जिससे कि आज का कलाकार आधुनिक प्रचार–प्रसार माध्यमों के ज़रिये अपनी कला को देश व दुनिया तक पहुँचा सके।

विभिन्न संस्थाओं को सहयोग –: सारथी देश के विभिन्न प्रान्तों के कलाकारों एवं उनकी संस्थाओं के साथ मिलकर कला के विस्तार और उनकी समस्याओं के समाधान हेतु काम कर रही है।

महाराष्ट्र–गुरू कृष्णराव मलखम्ब संस्था, श्री सामरथ व्यायाम मन्दिर, एन.सी.पी.ए. मुम्बई
गुजरात – तेजी बेन शिल्प संस्था, पटोला हेरिटेज, पाटन
राजस्थान – पहचान केन्द्र
केरल – आरती, सी. वी. एन. कलरीपैट
अन्ध्रप्रदेश – नृत्यांजलि
उड़ीसा – सृजन, दसभुजा गोटीपुआ, परम्परा, अन्वेषा
बिहार – विकलांग हस्तकला समिति, लेपरेसी रिहेबिलीटेशन सेन्टर, अखिल भारतीय प्रजापति कुम्हार संघ
छत्तीसगढ़ – तीजन बाई कला केन्द्र, लोक दर्शन
दिल्ली –भूले बिसरे कलाकार सोसाईटी, मसेत, नायिका, दस्तकार, कलन्दर मेजिशियन्स सोसायटी, एशियन हेरिटेज फाउण्डेशन, हस्तकला कल्याण परिषद आदि।

जागरुकता –: साफ–सफाई, बच्चों में पढ़ाई–लिखाई को बढ़ावा देने के साथ–साथ अपने पारम्परिक हुनर को सीखने के लिए विशेष अभियान के ज़रिये काम करते हैं।

क़ानूनी सलाह –: व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से ज़रूरत पड़ने पर कलाकारों एवं कला संस्थाओं को उचित न्याय दिलाने के लिए अग्रसर रहते हैं।

चिकित्सा सुविधा –: आर्थिक रुप से कमज़ोर कलाकारों को ज़रूरत के हिसाब से चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने में मदद करते हैं।

प्रतिभाओं की खोज –: सुविधा के अभाव में पीछे रह जाने वाले तथा कला के प्रति समर्पित व सृजनशील बच्चों की खोज करना, और उन्हें सहयोग देना।

ज़रूरतमंद कलाकारों के सामूहिक स्तर के अलावा निजी समस्याओं के समाधान के लिए हमेशा मददगार है।

निमन्त्रण

सुनहरे भविष्य की आशा लिए बुनकर, दस्तकार, संगीतकार, व लोक कलाकार दिल्ली की कच्ची बस्तियों के निवासी स्वतन्त्रता दिवस की पूर्व संध्या पर आप को सादर आमन्त्रित करते हैं।

कलाकारों की बस्ती में,
आज़ादी की मस्ती में।
पुतली नाचे, नट करे करतब,
रूप दिखाये बहरूपिया, जादू कर दे दंग।
स्वतन्त्रता का जश्न मनायें,
अद्भुत कलाओं के संग।

कार्यक्रम :

14 अगस्त 2005

10:30 बजे प्रातः——————— झण्डा रोहण, राष्ट्रगान
10:35 बजे प्रातः——————— अतिथि भाषण
10:45 बजे प्रातः——————— सांस्कृतिक कार्यक्रम

कार्यक्रम स्थल :– भूले बिसरे कलाकार वर्कशॉप, कठपुतली कॉलोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली–8 फोन न0: 25706189, 9899577370

कार्यक्रम सहयोगी : भूले बिसरे कलाकार कोआपरेटिव सोसायटी।

आईये कला का माहौल बनायें, कलाकारों का हौसला बढ़ायें।

शुभकामना सहित
राजीव सेठी
(राजीव सेठी)

सारथी– नेहरू कला कुंज, फ्लैट नं० 4, शंकर मार्किट, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली –110001
फोन: 23411107, 23413744 फैक्स: 23414065 ई–मेल: sarthi@nda.vsnl.net.in